चित्तीदार इल्ली :-

पहचान :- इस कीट की दो जातियां भिंडी की फसल पर पायी जाती है। इ. वाइटेला जाति के प्रौढ़ के अगले पंख सफेद रंग के होते है तथा बीच में हरी पट्टी होती है। यह पट्टी अंदर की ओर सॅकरी तथा बाहर की ओर चौडी होती है। इ. इन्सुलाना जाति के प्रौढ़ के अगले पंख हरे होते है। इन दोनो कीटों की इल्ली भूरे रंग की होती है। इनके शरीर में छोटे–छोटे बाल होते है तथा बीच–बीच में काले एवं नारंगी रंग के धब्बे रहते है। इसी कारण इसे धब्बों वाली चित्तीदार इल्ली कहते है।

नुकसान का तरीका :- इस कीट की छोटी इल्लियां कोमल शाखाओं में छेद करके अंदर चली जाती है तथा शाखाओं को अंदर ही अंदर खाती है। इसके कारण प्रभावित शाखायें मुरझा जाती है। तब पौधों में कलियॉ, फूल एवं फल लगने लगते है तब इल्लियॉ इसको नुकसान पहुॅचाती है। प्रभावित कलियॉ नहीं खिलती हैं तथा फूल झड़ने लगते है। क्षतिग्रस्त फलों में इल्ली की विष्ठा भरी रहती है।

नियंत्रण :-

भिंडी के प्रमुख कीटों का नियंत्रण इस प्रकार करें :- प्रारंभिक अवस्था में कीट से प्रकोपित प्ररोहों को चुनकर नष्ट करें (चित्तीदार इल्ली) जमीन पर गिरी हुई कलिकाओं तथा क्षतिग्रस्त फलों को इल्लियॉ सहित तोड़कर नष्ट कर दें (चित्तीदार इल्ली) फसल समाप्त होने पर भिंडी के पौधो को फलों सहित नष्ट कर दें।

मेलाथियान 50 ई.सी. एक लीटर या कार्बेरिल घुलन शील पाउडर 50 प्रतिशत 1 से 1.5 किलो प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करें(चित्तीदार इल्ली एवं सफेद मक्खी) फलों की तुड़ाई करने के बाद ही कीटनाशकों का उपयोग करें तथा छिड़काव करने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक भिंडी की तुड़ाई न करें।

प्रमुख रोग

1. पीतशिरा मोजेक :- यह भिंडी का सबसे व्यापक, हानिकारक विशाणु जनित रोग है। इस रोग की तीव्रता इस बात से आसानी से आंकी जा सकती है कि यदि बीज के अंकुरण के 20 दिन के अंदर रोग हो जाया तो लगभग 98 प्रतिशत हानि फसल को होती है अतः रोग फैलाने वाले कीट का रोग के फैलाव से धनात्मक संबंध होता है तथा रोग फैलाने वाले कीट (सफेद मक्खी) की संख्या मार्च–जून में अधिक होती है क्योंकि इस दौरान मौसम में तापमान अधिक व नमी कम हो जाती है। यह रोग भिंडी कुल के अन्य सदस्यों पर भी आता है व ये सदस्य पौधे सह–परपोशी के रूप में रोगकारक विषाणु को आश्रया देते है। रोगग्रस्त पौधों में पत्तियों की शिरायें व उपशिरायें कुछ मोटी हो जाती है। बौने पौधे से प्राप्त फल छोटे, हल्के रंग के व विकृत हो जाते है जो विक्रय हेतु अनुपयुक्त होते है।

रोग प्रबंधन :- उचित रोग प्रबंधन हेतु रोग प्रतिरोधी/सहनशील जातियों जैसे दफ्तरी, परभनी/क्रांति, अर्का अभया आदि को लगाना चाहिये। रोगी पौधो को उखाड़ कर तुरंत नष्ट कर देना चाहिये, ताकि शेष स्वस्थ फसल पर संक्रमण को रोका जा सके। ज्वार, बाजरा, मक्का की 4–5 लाइनों को भिंडी बोने के 60 दिन पूर्व रक्षक फसल के रूप मे लगाते है तथा उनमें 3–4 बार कीटनाशक का छिड़काव कर रोग फैलाने वाले कीट की संख्या का नियंत्रण कर रोग प्रबंध करना चाहिए। फसल में अंकुरण के 7 दिन पश्चात् ही नुवाकान दवा (1 मि.ली. दवा 1 लीटर पानी) का छिड़काव 15–20 दिन के अंतराल से करते है।

2. पत्ती धब्बा (रोगकारक - सर्कोस्पोरा मिलिएंस व हिविस्कोई) :- इस रोग का प्रकोप आर्द्र (नमीयुक्त) वातावरण में अधिक होता है। इस रोग का संक्रमण पत्तियों पर होता है जिससे उनमें कोणीय काले धब्बे बनते है व कभी–कभी पत्तियों में उत्पन्न धब्बों के बीच का भाग धूसर तथा किनारे का भाग नीला–लोहित होता है। पत्तियों पीली होकर टूटकर गिर जाती है। यदि तापक्रम 25 से 29 सेंटीग्रेड के बीच हो तो रोग का प्रकोप उग्र रूप से होता है।

रोग प्रबंधन :- खेत में पड़े रोगग्रस्त अवशेषों को नष्ट कर देना चाहिये। रासायनिक कवकनाशियों से बोर्डो मिश्रण (0.08 प्रतिशत) या डायथेन एम–45 अथवा डायथेन जेड–78 दवा (0.25 प्रतिशत) या ताम्रयुक्त फफूंदनाशी दवाओं जैसे सी.ओ.सी, ब्लू कॉपर आदि 0.3 प्रतिशत की दर से घोल का छिड़काव नियमित रूप से करना चाहियें।

उपज :- वर्षा ऋतु की फसल में 100 से 125 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा ग्रीष्म ऋतु की फसल में 60–70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से उपज प्राप्त होती है। भिड़ी की पहली तोड़ाई 60–70 दिन बाद ले सकते है और एक–एक दिन के अंतराल में करीब 15–20 बार इसकी तुड़ाई की जाती है।

खरीफ भिड़ी :- कुल लागत–31,800 रू/हे.,कुल आय – 62,500रू हे शुद्ध लाभ – 30,600 रू/हे है।

ग्रीश्म भिड़ी :- शुद्ध लाभ 40,000 रू/हे.।

भिण्डी की खेती

संरक्षक :
प्रो. यू.के. मिश्र
कुलपति
छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय

संकलनकर्ता :
रोशन लाल साहू
डॉ. डी. भोसले
डॉ. एस.के. थापक
उमेश कुमार पटेल

मार्गदशन :
डॉ. शरद मिश्रा
(निदेशक विस्तार सेवाएं)

निदेशक विस्तार सेवाए
छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)